International Journal of Research in Social Sciences
Volume 8, Issue 11 (November 2018)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मीडिया की दुनिया और नागरिक पत्रकारिता

Mk- eqds'k dqekj fejkBk
सहायक प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
जामिया मिल्लिया इस्लामिया
नई दिल्ली– 110025

वर्तमान नागरिक समाज अपने आस–पास होने वाली घटनाओं और बदलावों को स्वयं देखने का अभ्यस्त होता जा रहा है। अनेक स्थानों पर वह स्वयं अपनी उपस्थिति दर्शाता है। वस्तुतः सत्य और यकीन को प्रस्थापित करने में आजकल मीडिया को खासा जोर–आजमाइश करना पड़ रहा है। कालांतर में उसके द्वारा की गई कुछ त्रुटियाँ एवं विसंगतियों की वजह से आम नागरिक का मन उसके द्वारा दिखाए गए सत्य से डगमगाया है। मीडिया की टीआरपी संस्कृति और ब्रेकिंग न्यूज शैली ने आम आदमी को किंचित उदासीन कर दिया है। प्रत्यक्ष हस्तक्षेप की सीमितता के कारण आम व्यक्ति मीडिया से मोहभंग की स्थिति में आ गया है। वैसे भी मीडिया के केन्द्र में या उसके प्रयोजन में आम नागरिक अभी भी अनुकूल वातावरण की तलाश में ही है। मीडिया की विश्वसनीयता संदेह के घेरे में है। सामाजिक सच की उसकी प्रस्तुति पूर्वाग्रह से ग्रसित लगती है। घटनाओं की उचित और समुचित जानकारी विज्ञापनों की आँधी में खो सी गयी है। आम नागरिक का सम्मान और संरक्षण विशिष्ट लोगों एवं उनके क्रियाकलापों की खबरों में तिरोहित हो गया है। इसका यह अर्थ कदापि न लिया जाना चाहिए कि लोकतंत्र में आम नागरिक की हैसियत घट गई है। भारत के केन्द्रीय एवं राज्यों में हुए आम चुनाव अधिकारों, अपनी जिम्मेदारियों और अपने विवेक के प्रति सजग है, सतर्क है। कई मामलों में तो वह मीडिया से भी आगे है। जेसिका लाल हत्याकांड, निर्भया बलात्कार कांड, अन्ना आंदोलन आदि इस बात के प्रमाण हैं। इनमें आम नागरिक ने अपनी भूमिका का सम्यक् निर्वाह किया और मीडिया और सत्ता तंत्र को अपनी सामूहिक ताकत से ध्यानाकर्षण कराया जिससे दोनों को इन पर ध्यान देना पड़ा और मीडिया की व्यापक कवरेज के बाद कठोर कानून बनाने का मार्ग सुलभ हो सका।

कहा जा सकता है कि लोकतंत्र में आम नागरिक का अपना महत्व है। एक सामान्य मतदाता होने के साथ–साथ वह तकनीकी युग में उपभोक्ता की भूमिका में भी

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 8, Issue 11 (November 2018)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

रहता है। मीडिया का आकर्षण सदैव उसे अपनी तरफ खींचता रहता है। सम–सामयिक मुद्दों पर आम नागरिक 'वर्जुअल संसार' में अपनी राय प्रदर्शित करता रहता है। एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते वह अपनी उपस्थिति को देश–हित में लगाना चाहता है। आम नागरिक अपने परिवार, देश, समाज, और पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी के निर्वहन में पीछे नहीं हटता है। अपने दैनिक जीवन की गतिविधियों में महज एक दर्शक की भूमिका से इतर वह कुछ अच्छा करने की जुगत में लगा रहता है। सोशल मीडिया में उसकी उपस्थिति अपने विचारों से सबको परिचित कराने की है। इसी प्रवृत्ति के कारण वह दैनदिन जीवन में घटित होने वाली घटनाओं का प्रत्यक्षदर्शी बनकर इंटरनेट पर प्रसारित भी कर देता है। इस पर बहस की जा सकती है कि सब कुछ 'ऑनलाइन' कर देने पर आमादा आम नागरिक वर्ग इसका किस प्रकार सकारात्मक उपयोग करे। सामाजिक दायित्व–बोध का अभाव इसकी जड़ में है। उधर मीडिया की दुनिया से आम नागरिक के सुख–दुख की खबरें लगभग गायब है। किसान, दलित, मजदूर, अल्पसंख्यक एवं अन्य हाशियाकृत समाज उसके एजेंडे से गायब ही है। यह एक चिंताजनक पहलू है। बावजूद इसके मीडिया की बढ़ती लोकप्रियता और पहुँच, तकनीकी दक्षता, आम नागरिक का इंटरनेट पर उदय, सोशल मीडिया में उसकी मौजूदगी और सामाजिक–राजनीतिक–धार्मिक–जातीय चेतना की वजह से एक आम नागरिक मीडिया संसार से अनिवार्य अन्तर्सम्बन्ध बनाए हुए है।

एक पत्रकार के लिए जरूरी यंत्र अब आपको 'मोबाइल' में एक जगह मिल जायेंगे। आम नागरिक को मोबाइल ने 'पावर' दी है। ज्ञान, सूचना, मनोरंजन की त्रयी अब मोबाइल की छोटी सी दुनिया में समाहित हो गई है। इंटरनेट एवं मोबाइल के अधिकाधिक प्रयोग से आम नागरिक के जीवन में क्रांतिकारी बदलाव आया है। 12 मार्च 1997 के जनसत्ता के अंक में सम्पदाकीय के अन्तर्गत इंटरनेट की प्रवृत्तियों पर लिखा गया था कि– "इंटरनेट की परिकल्पना के पीछे दुनिया के सारे ज्ञान को समाहित कर लेने की इच्छा है। यह हमारे देखते–देखते हो रहा है कि सारे पुस्तकालय, सारे संगीत के रिकार्ड, सारे महत्वपूर्ण चित्र और दुनिया भर के तमाम विषयों की न जाने कितनी सारे महत्वपूर्ण चित्र और दुनिया भर के तमाम विषयों की न जाने कितनी स्थिर–गतिशील सूचनाएँ कुछ लोगों के कम्प्यूटर पर इंटरनेट के मार्फत आपस में सूचनाओं का आदान–प्रदान भी कर सकते हैं।"[प]

आज कम्प्यूटर का स्थान परिवर्तित होकर मोबाइल में स्थित हो गया है। अतः प्रत्येक मोबाइल वर्तमान में मीडिया का प्रभावी सूत्र नजर आता है। आम नागरिक इसके प्रयोग से मीडिया में अपनी सहभागिता निश्चित कर रहा है। साथ ही साथ वह मीडिया

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 8, Issue 11 (November 2018)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

को अन्य माध्यमों के प्रयोग द्वारा नयी राह भी दिखा रहा है। लोक के प्रति अपनी जिम्मेदारी का अहसास और उसके हितार्थ उठाए गए आम आदमी के पत्रकारिय कदम नागरिक पत्रकारिता को जन्म देते हैं।

विश्व भर के मीडिया में इन दिनों नागरिक पत्रकारिता अर्थात् सिटीजन जर्नलिज्म को लेकर बहस छिड़ी हुई है। नागरिक पत्रकारिता पर व्यापक चर्चा हो रही है। इसके स्वरूप एवं क्षेत्र को लेकर बैठक की जा रही है। हालाँकि भारत में भी अब यह प्रारंभ हो चुका है। इसके भारतीय संस्करण को लेकर कुछ आशंकाएँ जरूर है लेकिन अपेक्षाकृत नया होने के बावजूद भारत में इसे लेकर काफी उत्साह है। वरिष्ठ टीवी पत्रकार राजदीप सरदेसाई ने अपने नए चैनल सीएनएनआबीएन (CNNIBN) को लाँच करते वक्त नागरिक पत्रकारिता का आह्वान किया था। चैनल की प्रमुख थीम नागरिक पत्रकारिता को केन्द्र में रखकर बनाई गई थी। दर्शकों के पास महत्वपूर्ण खबर की क्लिप को उन्होंने अपने चैनल पर जगह दी और कई बार तो कुछ नागरिक श्रेष्ठ सिटीजन जर्नलिस्ट के पुरस्कार से भी नवाजे गए। इससे दर्शकों में चैनल के प्रति आकर्षण बढ़ा और इसकी देखा–देखी कई मीडिया चैनलों ने अपने यहाँ भी नागरिक पत्रकारिता को प्रारंभ कर दिया है। फुटेज की डिमांड, सूचना का अधिकार और कैमरा या हैण्डीकैम से युक्त स्मार्टफोन की सर्वसुलभता ने नागरिक पत्रकारिता को नए आयाम दिए हैं। नागरिक पत्रकारिता को समझाते हुए गोपाल प्रधान लिखते हैं– "इन नागरिक पत्रकारों की खूबी यह है कि वे न सिर्फ मुख्यधारा के समाचार मीडिया के पाठक, दर्शक और श्रोता हैं बल्कि वे पुराने दौर के निष्क्रिय आडियंस की तुलना में अपने अधिकारों को लेकर सक्रिय आडियंस है।"[पप] वैकल्पिक मीडिया के आंदोलन में सहभागी के रूप में नागरिक पत्रकारिता का दायरा निरंतर विस्तृत होता जा रहा है। मोहन जयपाल नागरिक पत्रकारिता की अवधारणा को बताते हुए लिखते हैं– "नागरिक पत्रकारिता से अभिप्राय साझेदारी पर आधारित एक ऐसी पत्रकारिता से है जिसमें आम नागरिक स्वयं सूचनाओं के संकलन, विश्लेषण, रिर्पोटिंग ओर उनके प्रकाशन–प्रसारण की प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका निभाते हैं।"[पपप] एक तरह से नागरिक पत्रकारिता आम व्यक्ति का मीडिया में हस्तक्षेप और वैकल्पिक मीडिया को गति देने की भी पहचान रखती है।

नागरिक पत्रकारिता प्रत्येक नागरिक को पत्रकार बनाने की बात पर प्रारंभ होती है। मुख्यधारा के मीडिया द्वारा उपेक्षित होने पर आम नागरिक नए मंचों का निर्माण करता है। इन नए मंचों पर 'गेटकीपर' संपादक की भूमिका खत्म सी हो जाती है। एक स्वस्थ लोकतंत्र के निर्माण में स्वच्छ नागरिक पत्रकारिता ज्यादा सहायक होती है। शेन बाउमैन ओर क्रिस विलिस इसे लोकतंत्र की मांग मानते हैं– "नागरिकों की इस

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 8, Issue 11 (November 2018)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भागीदारी का उद्देश्य स्वतंत्र, विश्वसनीय, तथ्यपूर्ण, व्यापक और प्रासंगिक सूचनाएँ मुहैया कराना है जो कि लोकतंत्र की मांग होती है।"[पअ] पत्रकारिता की सीमा में निरंतर होता विस्तार आम नागरिक को सुविधा देता है कि वह आसपास की क्लिप बनाएँ, घटनाओं और तथ्यों का ब्यौरा एकत्र करें और उन्हें लिखकर या बोलकर अन्य लोगों तक पहुँचाए। ऐसे अनेक उदाहरण अब हमारे पास मौजूद हैं जिनसे पता चलता है कि नागरिक पत्रकारिता अपना कार्य बखूबी निभा रही है। सामाजिक जवाबदेही उसे नए मुकाम तक ले जा रही है। उसकी क्लिपिंग के आधार पर न्यूज निर्माण हो रहा है।

संचार के क्षेत्र में तेजी से हो रहे विकास के कारण परिवर्तन का स्वर सुदूर क्षेत्रों तक पहुँचा है। विशेषज्ञों का मानना है कि पत्रकारिता का झुकाव शहरीकृत रहा है। परिस्थितियों में आ रहे परिवर्तन ने आम नागरिकों को जागरूक किया है। शहर के साथ–साथ गाँवों में भी तकनीक की दस्तक ने आम नागरिकों को मीडिया से जोड़ा है। अब आम नागरिक पत्रकार बनकर अपने क्षेत्र की समस्याओं को बताने का प्रयास कर रहे हैं। वस्तुतः चहुँमुखी विकास के लिए प्रत्येक नागरिक को अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी। नागरिक पत्रकारिता की अवधारणा के मूल में यही है। समस्याओं को जानना, समझना और स्थितियों को सबसे अवगत कराना नागरिक पत्रकारिता का ध्येय है। इसमें आम नागरिक पत्रकार की भूमिका निभाते हैं। मीडिया की पारदर्शिता और उसकी विश्वसनीयता को बरकरार रखे जाने के लिए भी नागरिक पत्रकारिता को धन्यवाद दिया जाना चाहिए। नागरिक अब अपनी भूमिका को पहचानकर उस नवीन मंच का भरपूर इस्तेमाल करने लगे हैं। इस सन्दर्भ में मीडिया पर नजर रखने वाला ब्लाग 'वीर–अर्जुन' पत्रकारिता के लिए नागरिक पत्रकारिता को महत्वपूर्ण मानता है– "आज का दर्शक या पाठक अपनी भूमिका को बेहतर समझने लगा है। लैटर टू एडीटर या हाँ या ना के संदेश भेजने से आगे निकलकर वह किसी भी मुद्दें पर अपनी राय देने के लिए सक्रिय हो गया है। अब एक आम आदमी सूचनाओं को हथियार के तौर पर प्रयोग करने में सक्षम है।"[अ] यह सच है कि सूचना के अधिकार ने नागरिक पत्रकारिता को सशक्त बनाया है। इस अधिकार के प्रयोग से 'व्हिसल ब्लोअर' अनेक तरह की लाभदायक एवं सामुदायिक हित की जानकारी लेकर सम्बन्धित विभागों या संस्थाओं की कमजोरियों को उजागर कर रहे है। मध्यप्रदेश का व्यापम घोटाला, महराष्ट्र का आदर्श सोसायटी घोटाला इसी तरह के मामले हैं। कई बार तो एक सामान्य नागरिक की पोस्ट की गई फोटो या सूचना से कार्य की गति में तीव्रता देखी गई है। इस तरह के परिणामों से आम नागरिक का उत्साहवर्धन होता है। वह और ज्यादा सक्रिय होकर व्यवस्था की सच्चाई को सामने लाने में सक्रिय हो जाता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 8, Issue 11 (November 2018)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पत्रकारिता प्रारंभ से ही चुनौतियों भरा क्षेत्र रहा है। सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक–सांस्कृतिक चुनौतियों का मुकाबला करने की बदौलत ही आज पत्रकारिता अपने वर्तमान स्थान तक पहुँची है। अनेक तरह के आन्दोलनों एवं जनमत को तैयार करने में पत्रकारिता की अहम भूमिका रही है। पत्रकार की स्थिति पर बात करते हुए डॉ. रेणुका नैयर लिखती हैं– "एक पत्रकार सक्रिय रूप से समाज के प्रजातांत्रिक विकास के लिए विचार विनिमय द्वारा सामाजिक संक्रमण के लिए वातावरण तैयार करता है। राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के लिए भी वातावरण तैयार करता है ताकि निरस्त्रीकरण तथा राष्ट्रीय विकास संभव हो सके। पत्रकार को राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, घोषणाओं व निर्णयों के प्रासंगिक प्रावधानों की जानकारी होनी चाहिए।"[अप] रेणुका जी का कथन वर्तमान संदर्भों में समीचीन है किन्तु स्थानीय या क्षेत्रीय विकास के बिना राष्ट्रीय विकास की बात बेमानी है। मुख्यधारा का मीडिया राष्ट्रीय महत्व के विषयों को महत्ता देता है। इससे स्थानीय सार पर या कहें तो मीडिया के दायरे से अलग क्षेत्र उपेक्षित रह जाता है। ऐसे क्षेत्र के लोगों में जब सामुदायिक चेतना जन्म लेती है तो वे यथायोग्य तरीके से अपने आप एवं विवेचित क्षेत्र को सामने लाने का उद्यम करने लगते हैं। स्थानीय स्तर पर इससे उनमें पत्रकारीय गुण आना स्वाभाविक लगता है। शहरी स्तर पर प्रत्येक तकनीकधारी व्यक्ति मानवीय गुणों के अनुसार पत्रकार रूप धारण किए रहता है। मीडिया, सोशल मीडिया पर उसकी 'वर्चुअल उपस्थिति' इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण भी है।

नागरिक पत्रकारिता का मूल उद्देश्य किसी भी व्यक्ति के विचार को सामने लाना भी है। वह अपने आंतरिक भावों के संधर्ष को, द्वन्द्व को बाह्य जगत में स्पष्ट करने की इच्छा रखता हो। जरूरत बस एक 'प्लेटफॉर्म' की है जो आज की यांत्रिक दुनिया में दुलर्भ कार्य नहीं है। आम पत्रकारिता के विलग इसमें किसी डिग्री की भी आवश्यकता नहीं है। आपकी कलम, आपका फोन, आपका कैमरा या रिकॉर्डर ही आपके संसाधन हैं जो इसमें आपकी सहायता कर सकते हैं। भरपूर इच्छाशक्ति और समुचित विकास हेतु प्रतिबद्ध कोई भी आम नागरिक इनका इस्तेमाल करके भावी पत्रकारिता को नयी दिशा दे सकता है। सूचना का अधिकार जैसा कानून इसमें सहायक की भूमिका निभा सकता है। एक सक्रिय एवं जागरूक नागरिक लोकतंत्र में नागरिक पत्रकारिता के माध्यम से सकारात्मक एवं क्रियाशील भूमिका का निर्वाह कर सकता है। कहा जा सकता है कि आने वाले समय में अगर हम सब अपने उत्तरदायित्व का पालन ईमानदारीपूर्वक करने लगे तो नागरिक पत्रकारिता सामाजिक जीवन में एक बड़ी भूमिका निभा सकती है।

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 8, Issue 11 (November 2018)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

लोकतंत्र में सामाजिक संवाद अत्यंत आवश्यक है, इसे नागरिक पत्रकारिता सीमित क्षेत्र में ही, लेकिन संभव बनाती है।

सोशल मीडिया की लोकप्रियता ने नागरिक पत्रकारिता को उड़ान का अवसर दिया है। हालांकि नागरिक पत्रकारिता पर अनेक तरह के आरोप लगाए जाते रहे हैं, किंतु अपनी सकारात्मक पहल से इसके उन सवालों का जवाब भी दिया है। तथ्य, स्पष्टता, संतुलन, वस्तुगत, अश्लीलता, व्यक्तिगत हमले, अतिहिंसा, भ्रामक, अफवाह आदि सन्दर्भों में नागरिक पत्रकारिता शिकायतों के केन्द्र में है। संपादक का न होना उसके लिए जिम्मेदार माना जाता है। इस सबके बावजूद मेरा तो यही मानना है कि नागरिक पत्रकारिता का ज्यों–ज्यों विकास होगा, प्रचार–प्रसार होगा सभी शिकायतें न्यून होती जाएगी। उसकी उड़ान और ऊँची होती जाएगी और वह अपने मकसद में कामयाब हो पाएगा। नागरिक पत्रकारिता की सफलता का एक उदाहरण "सी.जी. नेट स्वर" है जो आदिवासी इलाकों कर समस्याओं को हमारे समक्ष लाता रहा है। अंत में यही कहाना चाहता हूँ कि सरकारें भी नागरिक पत्रकारिता को प्रोत्साहित करे जिससे पत्रकारिता अपने वास्तविक स्वरूप में लौट सके और अपने पर लग रहे आक्षेपों को जवाब दे सके। एक स्वस्थ लोकतंत्र हेतु नागरिक पत्रकारिता का विकास परमावश्यक है।

संदर्भ सूची–

[प]जनसत्ता, सम्पादकीय, पृ.– 12 मार्च 1997
[पप]आनंद प्रधान, asbmassindia.blogspot.com 31 जन. 2012
[पपप]मोहन जयपाल, mohanjaipla.610GSpot.com, 12 oct., 2015
[पअ]शेन बाउमैन, क्रिस विलिस, बी मीडियाः हाउ आडियंसेज आर सेंपिंग द फ्यूचर ऑफ न्यूज एंड इन्फोरमेशन
[अ]'वीर अर्जुन' ब्लॉग, 24 अक्टू, 2013
[अप]डॉ. रेणुका नैयर, ग्रामीण क्षेत्र की पत्रकारिता, हरियाणा साहित्य अकादमी, हरियाणा पृ.– 127–128, सं. 2002